भगत सिंह ने कहा ...

" भयानक असमानता और जबर्दस्ती लादा गया भेदभाव दुनिया को एक बहुत बड़ी उथल-पुथल की ओर लिये जा रहा है। यह स्थिति अधिक दिनों तक कायम नहीं रह सकती। स्पष्ट है कि आज का धनिक समाज एक ज्वालामुखी के मुंह पर बैठकर रंगरेलियां मना रहा है और शोषकों के मासूम बच्चे तथा करोड़ों शोषित लोग एक भयानक खड्ड की कगार पर चल रहे हैं।"

(असेम्बली बम कांड के बाद दिल्ली सेशन कोर्ट में भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त का बयान)

चीजों को बदलने के लिए
चीजों को समझना होगा !
चीजों को बदलने की प्रक्रिया में
खुद को बदलना होगा !!

तुम प्यार करो ऐसे
जैसे किसी ने किसी को कभी नहीं किया
तुम घृणा करो ऐसे
जैसे किसी ने किसी पर कभी नहीं किया
हंसो तो ऐसे हंसो
कि हर तरफ खिल उठें
सत्य और सौन्दर्य के फूल
रोओ तो ऐसे रोओ
कि आंसुओं से झिलमिला उठे जाग्रत
मनुष्य का विषाद
तुम बढ़ो
सागर के ज्वार की तरह बढ़ो
और दफन कर जाओ
तमाम जुल्मो-सितम
सात समुद्र पार बियाबान में ...

● महेश्वर

क्रान्तिकारी नौजवान की कसौटी

"कोई नौजवान क्रान्तिकारी है अथवा नहीं, यह जानने की कसौटी क्या है ? ... इसकी कसौटी केवल एक है, यानी यह देखना चाहिए कि वह व्यापक मजदूर-किसान जन-समुदाय के साथ घुलमिल कर एक हो जाना चाहता है अथवा नहीं ? क्रान्तिकारी वह है जो मजदूरों और किसानों के साथ घुलमिलकर एक हो जाता हो, वरना वह क्रान्तिकारी नहीं है या प्रतिक्रान्तिकारी है।"

● *माओ त्से-तुङ.*